R.N.I. UPBIL/2009/28555

ISSN 0975-2579

वर्ष 6 | अंक 1 | जून 2014

शिक्षा कलश

अर्द्ध वार्षिक शोध पत्रिका

SHIKSHA KALASH

Half Yearly Research Journal

डॉ0 भानु प्रताप सिंह
प्रधान सम्पादक

डॉ0 विपिन कुमार सिंह
सम्पादक

विमला शिक्षा एवं सेवा समिति, नेवादा-बल्दीराय, सुलतानपुर (उ0प्र0) के सहयोग से प्रकाशित

Scanned with Oken Scanner

शिक्षा कलश
वर्ष 6, अंक 1, जून 2014

R.N.I. UPBIL/2009/28555
ISSN 0975-2579

अनुक्रमणिका

सम्पादक की कलम से ----

वैश्वीकरण और शिक्षक–शिक्षा (उत्तर प्रदेश के विशेष सन्दर्भ में) 1
अनिल कुमार पटेल

डॉ0 अम्बेडकर और लोकतन्त्र 7
डॉ0 गौरव कुमार श्रीवास्तव

भारत और चीन में बौद्ध कलाओं के प्रतिमान और प्रभाव 11
डॉ0 उषा यादव

21वीं सदी में अध्यापक शिक्षा की नवीन चुनौतियाँ एवं दिशाएँ 22
डॉ0 पूनम यादव, डॉ0 अनुराग सिंह

गीता में वर्णित कर्मयोग की वर्तमान में प्रासंगिकता 26
धर्मेन्द्र नाथ मिश्र

अथर्ववेद का महत्व 29
श्रवण कुमार

जयशंकर प्रसाद की कहानी कला 32
डॉ0 सरोज, कौशलेन्द्र कुमार सिंह

महात्मा गाँधी एवं गिजुभाई बधेका के प्राथमिक शिक्षण पद्धति की वर्तमान में प्रासंगिकता 37
डॉ0 ऊषा सिंह, सन्ध्या सिंह

देशी राज्यों का एकीकरण : सरदार वल्लभ भाई पटेल 42
डॉ0 (श्रीमती) उमा सिंह, श्रवण कुमार यादव

राष्ट्र के विकास में सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की भूमिका : पं0 दीनदयाल उपाध्याय 47
डॉ0 राकेश सिंह, सुनील कुमार दूबे

अरब–इजराइल संघर्ष : महाशक्तियों का हस्तक्षेप 51
डॉ0 के0डी0 शर्मा, चक्रवर्ती सिंह

जल प्रदूषण एवं अंतरिक्ष प्रदूषण 56
पूजा सिंह

पर्यावरण संरक्षण में मनरेगा की भूमिका 60
अंजू यादव

बहराइच जनपद में जनसंख्या वृद्धि : एक भौगोलिक अध्ययन 72
डॉ0 प्रहलाद कुमार

Scanned with Oken Scanner

वित्तपोसित एवं स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों की अध्यापन अभिक्षमताओं का तुलनात्मक अध्ययन 78
डॉ0 विपिन कुमार सिंह, प्रतिभा सिंह

भारत रूस मैत्री सन्धि–1971 : एक टिकाऊ रिश्ता 84
डॉ0 आर0पी0 सिंह, संगीता बाजपेई

हर्षोत्तरकाल की सामाजिक दशा (700 से 1200 ई0 के मध्य) 88
डॉ0 कविता सिंह, राजेश सिंह

पंचायतीराज और महिला सशक्तीकरण 91
सुरसरि मिश्रा

बालकों के अधिगम विकास में माता–पिता का योगदान 95
डॉ. विनोद सिंह भदौरिया, डॉ. अखिल कुमार श्रीवास्तव

विद्यालयी शिक्षा में पंचायतों की भूमिका 99
डॉ. अखिल कुमार श्रीवास्तव, डॉ. विनोद सिंह भदौरिया

निराला का रहस्वादी चिन्तन 104
डॉ0 सत्यपाल तिवारी, दीपशिखा सिंह

The Role of Library and Information Science Education in National Development 108
Suman Rai

Convergence of IAS as Per IFRS not Adoption 112
Ms SHAFALI

Environmental Concerns and Indian Federalism: Some Contentious Issues 119
Dr. Rajesh Kumar Singh, Km. Aparna Mishra

Quality Improvement For Teacher Education 129
Abha Chaubey, Pawan Kumar Gupta

A Study of Environmental Awareness among High School Students 132
Neetu Antil

Education Today and Tomorrow 139
Smt. Sadhna Dixit

The Feminist Movement and Sarojini Naidu 142
Dr. Vidyawati Yadav

Attitude of Graduate and Post-graduate Students towards Privatisation of Higher Education 146
Ms. Antim Jain

Scanned with Oken Scanner

शिक्षा कलश
वर्ष 6, अंक 1, जून 2014
R.N.I. UPBIL/2009/28555
ISSN 0975-2579

वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों की अध्यापन अभिक्षमताओं का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ0 विपिन कुमार सिंह*
प्रतिमा सिंह**

शिक्षा सर्वांगीण विकास की प्रक्रिया है शिक्षा के द्वारा ही विकसित राष्ट्र की कल्पना की जा सकती है। आज के बच्चे कल के नागरिक हैं और आने वाले दिनों में देश का भार इन्हीं नागरिकों के जीवन पर निर्भर होगा। अतः भविष्य के निर्माण हेतु हमें आज को सँवारना होगा।

शिक्षा के अनेक स्तर हैं जैसे प्राथमिक, माध्यमिक और उच्च शिक्षा। किन्तु विवेचन करने से यह स्पष्ट होता है कि शिक्षा में माध्यमिक शिक्षा सबसे महत्वपूर्ण स्तर है। यह प्राथमिक और उच्च शिक्षा के मध्य सम्बन्ध स्थापित करने वाली कड़ी है। यह प्राथमिक तथा उच्च शिक्षा में संयोजन का कार्य करती है माध्यमिक शिक्षा स्वयं में एक पूर्ण तथा स्वतन्त्र इकाई है जिसकी समाप्ति के पश्चात छात्र स्वावलम्बी तथा आत्मनिर्भर बनता है।

प्राचीन काल में भारतीय समाज में शिक्षक को भविष्य निर्माता कहा जाता था क्योंकि शिक्षक जिन बच्चों को आज शिक्षा देते हैं वे भविष्य में राष्ट्र के अच्छे नागरिक बनते हैं तथा देश के प्रगति के सच्चे कर्णधार होते हैं। दिन–प्रतिदिन के जीवन में प्रायः विभिन्न व्यक्तियों यथा अध्यापकों, प्रधानाध्यापकों एवं अन्य अधिकारियों को यह कहते हुए सुना जाता है कि अमुक छात्र/छात्रा की यांत्रिक कार्यों में रूचि है, इसलिए इसे अभियन्ता बनना चाहिए था अमुक छात्र प्रशिक्षित होकर अच्छा संगीतकार बन सकता है आदि। अतः स्पष्ट है कि सम्बन्धित छात्र या व्यक्ति में कुछ ऐसी प्रतिभा, क्षमता या योग्यता होती है जो उसे किसी विशिष्ट क्षेत्र में सफलता प्राप्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है, इसे मनोविज्ञान की भाषा में अभिक्षमता कहते हैं।

अभिक्षमता का तात्पर्य उस शक्ति से है जिसके कारण व्यक्ति किसी कार्य को करने में शीघ्र दक्षता प्राप्त करता है फ्रीमैन के अनुसार "अभिक्षमता ऐसी विशेषताओं के समूह का द्योतक है जो प्रशिक्षण के उपरान्त किसी विशिष्ट ज्ञान कौशल या संगठित प्रतिक्रियाओं के समुच्चय को अर्जित करने की व्यक्ति को योग्यता की द्योतक है जैसे भाषा बोलने, संगीतकार बनने, यांत्रिक कार्य करने की योग्यता।"

शिक्षा में सुधार लाने के लिए यह आवश्यक है कि शिक्षकों की गुणवत्ता बढ़ाई जाये और शिक्षक शिक्षण के प्रति समर्पित हो यह तभी सम्भव है जब ऐसे लोग शिक्षण व्यवसाय में आयें जिनकी अध्यापन अभिक्षमता उच्च स्तर की होती है प्रशिक्षण के बाद जहाँ उनकी योग्यता में निखार आता है वही सद्गुणों का विकास भी होता है।

सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन–

इस अध्ययन के सन्दर्भ में शोधकर्ता ने अलग–अलग शोध का अध्ययन किया और पाया कि राय

*ग्राम– नेवादा, पोस्ट–बल्दीराय, जनपद–सुलतानपुर (उ0प्र0)
**ग्राम– नेवादा, पोस्ट–बल्दीराय, जनपद–सुलतानपुर (उ0प्र0)

Scanned with Oken Scanner

सामन्त (1977) ने सामान्य ज्ञान शिक्षक, मनोवृत्ति, शिक्षक का सामंजस्य एंव शैक्षिक क्षमता के बीच सम्बन्धों का अध्ययन किया ओर पाया कि शिक्षक अभिवृत्ति एवं शिक्षक के सामंजस्य के बीच सकारात्मक, सह सम्बन्ध है। विडाजियन और बारायल (1970) ने अध्यापकों की अभिक्षमता का अध्ययन किया ओर इस बात की पुष्टि किया कि अध्यापकों की अभिक्षमता उनके छात्रों की योग्यता और व्यवहार को प्राभावित करती है।

अध्ययन की सार्थकता–

माध्यमिक शिक्षा का सम्पूर्ण शिक्षा व्यवस्था में विशेष महत्व है। किशोर बालक/बालिकाओं में ज्ञानवर्धन के साथ–साथ सामाजिक सद्गुणों का विकास, अधिकारों एवं कर्तव्यों का ज्ञान, राष्ट्रीय एकता एवं अखण्डता के प्रति जागरूकता, आत्मनिर्भरता और आत्मविकास आदि चारित्रिक गुणों का विकास करना माध्यमिक शिक्षा का मूल उद्देश्य है।

वर्तमान परिस्थितियों में शिक्षक का स्तर गिरता जा रहा है न शिक्षक पढ़ाना चाहते हैं और न ही छात्र पढ़ना चाहते हैं। आजकल के अध्यापक में सकारात्मक अध्ययन अभिवृत्ति का अभाव दिखाई पड़ता है। इस शोध कार्य के आधार पर उच्च अध्यापन अभिक्षमता वाले भावी शिक्षकों, प्रबन्धकों को भविष्य में शिक्षण व्यवसाय अपनाने के लिए व्यक्तिगत और सामाजिक दोनों दृष्टियों से निर्देशन प्रदान करने हेतु शोधकर्ता ने माध्यमिक स्तर पर वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित विद्यालयों के अध्यापकों की अध्यापन अभिक्षमताओं का तुलनात्मक अध्ययन नामक समस्या का चयन किया।

समस्या कथन– "वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालय के अध्यापकों की अध्यापन अभिक्षमताओं का तुलनात्मक अध्ययन।"

अध्ययन के उद्देश्य–

1. वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों के पुरूष अध्यापकों की अध्यापन अभिक्षमताओं का अध्ययन करना।
2. वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों के महिला अध्यापकों के अध्यापन अभिक्षमताओं का अध्ययन करना।
3. वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों के अध्यापकों की अध्यापन अभिक्षमताओं का अध्ययन करना।

परिकल्पनाएं–

1. वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों में पुरूष अध्यापकों की अभिक्षमताओं में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों के महिला अध्यापकों के अध्यापन अर्धक्षमताओं

Scanned with Oken Scanner

में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

3. वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों की अध्यापन अभिक्षमताओं में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

अध्ययन की सीमाएं–

1. प्रस्तुत अध्ययन शिक्षा के माध्यमिक स्तर पर ही किया गया।
2. प्रस्तुत शोध हेतु विद्यालयों का चयन केवल सुलतानपुर जनपद से ही किया गया।
3. प्रस्तुत शोध अध्ययन में केवल माध्यमिक स्तर पर अध्यापनरत वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित विद्यालयों के अध्यापकों की अध्यापन अभिक्षमताओं पर किया गया।

शोध प्रविधि–

प्रस्तुत शोध में विवरणात्मक सर्वेक्षण प्रविधि का प्रयोग किया गया।

जनसंख्या–

प्रस्तुत शोध की जनसंख्या के रूप में सुलतानपुर जनपद के माध्यमिक स्तर पर वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित विद्यालयों में अध्यापनरत समस्त अध्यापकों को लिया गया है।

न्यादर्श–

न्यादर्श के रूप में 10 माध्यमिक विद्यालयों का चयन (5 वित्तपोषित एवं 5 स्ववित्त पोषित) यादृच्छिक विधि से किया गया। वित्तपोषित तथा स्ववित्तपोषित विद्यालयों में से प्रत्येक प्रकार के विद्यालयों से 8–8 अध्यापकों का चयन पुनः यादृच्छिक विधि से किया गया।

प्रयुक्त उपकरण–

प्रस्तुत शोध कार्य में अध्यापकों के अध्यापन अभिक्षमताओं का मापन करने के लिए डॉ0 आर0पी0 सिंह पटना एंव डॉ0 एस0 एन0 शर्मा पटना द्वारा प्रमाणीकृत अध्यापन अभिक्षमता परीक्षण माला (टी0ए0टी0वी0) का प्रयोग किया गया है।

प्रयुक्त सांख्यिकी–

शोधकार्य के सम्पादन के लिए संग्रहित आंकड़ों के विश्लेषण हेतु वर्गान्तर एवं बारम्बारता, मध्यमान प्रामाणिक विचलन सार्थकता ज्ञात करना तथा क्रान्तिक अनुपात का प्रयोग किया गया।

उद्देश्य 1– वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों के पुरूष अध्यापकों की अध्यापन अभिक्षमताओं का तुलनात्मक अध्ययन

Scanned with Oken Scanner

तालिका–1

प्रतिदर्श	N'	M'	SD'	D'	Sed	df	t ratio	सार्थकता T का स्तर	सारणी मान
वित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों के पुरूष अध्यापक	20	87.5	1.1	0.5	0.33	38	1.3	0.05	2.21
स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों के पुरूष अध्यापक	20	87.55	0.96					0.01	2.70

तालिका 1 के आधार पर स्पष्ट है कि वित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों के पुरूष अध्यापकों की अभिक्षमता सम्बन्धी मध्यमान क्रमशः 87.5 व 87.55 तथा प्रामाणिक विचलन क्रमशः 1.11 व 0.96 है तथा उनके मध्यमानों का अन्तर 0.05 है। अन्तर की सार्थकता की जांच के लिए सारणी मान से टी0 मूल्य की तुलना की गई जिसमें यह पाया गया है कि वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित विद्यालयों के लिए परिगणित टी0 मूल्य का मान सारिणी मान (df = 38) पर 0.05 तथा 0.01 स्तर पर क्रमशः यह मान दोनों स्तरों पर सार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकृत होती है। अतः वित्तपोषित एवं स्ववित्त पोषित माध्यमिक विद्यालयों के पुरूष अध्यापकों की अभिक्षमताओं में सार्थक अन्तर है।

उद्देश्य– 2 वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों की महिला अध्यापकों की अध्यापन अभिक्षमता का तुलनात्मक अध्ययन

तालिका–2

प्रतिदर्श	N'	M'	SD'	D'	SEd	df	t ratio	सार्थकता T का स्तर	सारणी मान
वित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों की महिला अध्यापक	20	88.6	1.0	.04	0.36	38	1.11	0.05	2.21
स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों की महिला अध्यापक	20	88.2	0					0.01	2.70

तालिका 2 के आधार पर स्पष्ट है कि वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों की महिला अध्यापिकाओं की अध्यापन अभिक्षमताओं का मध्यमान क्रमशः 88.6 व 88.2 है तथा उनके मानक विचलन क्रमशः 1.0 व 1.27 है तथा मध्यमानों का अन्तर 0.4 है। सार्थकता की जांच करने के लिए सारणी मान से टी0 मूल्य की तुलना की गई जिसमें यह पाया गया है कि वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों की महिला अध्यापिकाओं के लिए परिगणित टी0 मान सारणी मान (df = 38 पर 0.05 = 2.21 व 0.01 = 2.70) है। दोनों स्तरों से कम है। अतः दोनों स्तरों पर शून्य परिकल्पना असार्थक सिद्ध हो रही है। अतः वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों के महिला अध्यापिकाओं की अध्यापन अभिक्षमताओं में सार्थक अन्तर है।

Scanned with Oken Scanner

उद्देश्य 3

वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालय के पुरूष एवं महिला अध्यापकों की अध्यापन अभिक्षमताओं का तुलनात्मक अध्ययन

तालिका – 3

प्रतिदर्श	N'	M'	SD'	D'	SEd	df	t ratio	सार्थकता T का स्तर	सारणी मान
वित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापक	40	88.0	1.18	0.3	0.28	38	4.34	0.05	1.06
स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापक	40	87.7	1.30					0.01	2.58

तालिका 3 के आधार पर स्पष्ट है कि वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों की अध्यापन अभिक्षमताओं का मध्यमान क्रमशः 88.0 व 87.7 है तथा उनके बीच का अन्तर 0.3 है। दोनों का मानक विचलन क्रमशः 1.18 तथा 1.30 है। अन्तर की सार्थकता की जांच करने के लिए सारणी मान से CR की गणना की गयी जिसमें पाया गया कि दोनों स्तर पर CR का मान सारणी मान से अधिक है। अतः दोनों स्तरों पर परिकल्पना सत्य सिद्ध होती है। अर्थात वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों की अध्यापन अभिक्षमाओं में सार्थक अन्तर नहीं है। अतः शून्य परिकल्पना सत्य सिद्ध होती है।

निष्कर्ष–

पूर्व में यह समझा जाता था कि केवल वित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों में अध्यापन अभिक्षमता अधिक होती है। क्योंकि इन विद्यालयों के अध्यापकों को सरकार द्वारा पर्याप्त प्रशिक्षण व सुविधाएं प्रदान की जाती हैं परन्तु वर्तमान में ऐसा नहीं है अब स्ववितत्तपोषित विद्यालयों के अध्यापक भी प्रशिक्षित होते हैं तथा विभिन्न सुविधाओं से सम्पन्न होते हैं। अतः इनकी अध्यापन अभिक्षमता भी वित्तपोषित विद्यालयों के अध्यापकों के समान होती है।

अध्ययन का परिणाम यह प्रदर्शित करता है कि वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालय के अध्यापकों के अध्यापन अभिक्षमता में कोई सार्थक अंतर नहीं है फलतः वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालय के अध्यापक की अध्यापन अभिक्षमता समान है।

वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित माध्यमिक स्तर पर अध्यापन करने वाले पुरूष अध्यापक की अध्यापन भावी क्षमताओं में तुलनात्मक रूप से अन्तर पाया गया। जहाँ वित्तपोषित विद्यालयों के अध्यापकों की अध्यापन अभिक्षमताओं का मध्यमान (M-87.50) तथा स्ववित्तपोषित विद्यालय के अध्यापकों की अध्यापन अभिक्षमताओं का मध्यमान (CM = 87.55) अपेक्षाकृत कम है। अतः वित्तपोषित विद्यालयों के पुरूष

Scanned with Oken Scanner

अध्यापकों में थोड़े सुधार की आवश्यकता है।

अध्ययनोपरान्त यह भी निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों की महिला अध्यापकों की अध्यापन अभिक्षमता में तुलनात्मक रूप से अन्तर पाया गया।जहाँ वित्तपोषित विद्यालयों की महिला अध्यापकों की अध्यापन अभिक्षमताओं का मध्यमान (M - 88.6) है वहीं स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालयों की महिला अध्यापक के अध्यापन अभिक्षमताओं का मध्यमान (M = 88.2) अधिक है। अर्थात स्ववित्तपोषित विद्यालयों की महिला अध्यापक की अध्यापन अभिक्षमता अपेक्षाकृत कम है। अतः स्ववित्तपोषित विद्यालयों की महिला अध्यापक के अध्यापन अभिवृत्ति के स्तर को सुधारने के लिए अतिरिक्त प्रशिक्षण की व्यवस्था करनी होगी जिससे सकारात्मक अध्यापन अभिक्षमता का विकास हो सके। महिला शिक्षकों में शैक्षिक तकनीक शिक्षण आव्यूह प्रतिमान आदि के बारे में विद्यालयों को आमंत्रित कर अध्यापक अभिक्षमता का विकास किया जा सकता है।

इस प्रकार उच्च अध्यापन अभिक्षमता बनाना, शिक्षक शिक्षार्थियों का संतुलित विकास कर सकेगा। उच्च अध्यापन अभिक्षमता से अधिगम प्रक्रिया प्रभावशाली बनेगी एवं छात्रों में रूचि का विकास हो सकेगा। इस प्रकार शिक्षक अच्छे नागरिक का निर्माण कर राष्ट्र की उन्नति में अभूतपूर्व योगदान दे सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ–

1. अस्थाना, विपिन (1999) मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
2. आस्टीन ई0 एण्ड ईमन वी (1999) पर्सनालिटी एण्ड इडिवीडुअल डिपार्टेंस
3. कपिल एच.के. (1998–99) अनुसंधान विधियाँ एच.पी. भार्गव बुक हाउस, आगरा।
4. कोल लोकेस (2009) शैक्षिक अनुसन्धान की कार्य प्रणाली, विकास पब्लिशिंग हाउस प्रा0 लि0, नई दिल्ली।
5. गुप्ता, एस.पी0 एवं गुप्ता अल्का (2008) सांख्यकी विधियाँ, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद।
6. गुप्ता, एस.पी. (2011) आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद।
7. चौहान एस.एन. (2007) एडवांस एजूकेशनल साइकोलॉजी विकास पब्लिकेशन हाउस, नई दिल्ली।
8. पाण्डेय के.पी. (2010) शैक्षिक अनुसन्धान विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।
9. राय पारसनाथ (2009–10) अनुसंधान परिचय, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, आगरा
10. बुच एम0वी0 फर्स्ट सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजूकेशन बड़ौदा सोसाइटी फार एजूकेशन रिसर्च एण्ड डेवलमेन्ट
11. बुच0एम0 वी0 सेकेण्ड सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजूकेशन बड़ौदा, सोसाइटी फार एजूकेशन रिसर्च एण्ड डेवलपिंग–2
12. बुच एम0वी0 (1998–99) थर्ड सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजूकेशन–2

Scanned with Oken Scanner

Scanned with Oken Scanner